कोरोना काल (वर्ष-2020 से 2022) में दिवंगत सदस्यों की सूची

क्र० सं०	नि० सं०	आ० स०सं०	दिवंगत तिथि	नाम / पदनाम / स्थायी पता / पत्राचार का पता
1	2	3	4	5
1	541	282	2020	इ० अनुप लाल मंडल, अधी०अभि० विद्युत (सेवा निवृत) ग्राम–मल्हीपुर, पो०–हसनपुर, चिनी मिल, जि०–समस्तीपुर, B-64, अशोक पुरी (खाजपुरा), पटना–14
2	572	984	2020	इ० भगवान सिंह, अवर सहायक विद्युत अभियंता (सेवा निवृत) पिता–राम सुन्दर सिंह, ग्राम–सुन्दर टोला, पो०–जितौरा, जिला–भोजपुर, देवी मंडप रोड़, हेहल, रॉची।
3	587	218	28.04.2021	इ० विनय कुमार सिन्हा, क०अभि०, राष्ट्रीय उच्चपथ अंचल, राँची, ग्राम–मोरियाँवा, पो०–हजरत साई, जिला–पटना, धनवन्ती प्रभाकुजं इटकी रोड़, हेहल–राँची–5, मो०–9431595807
4	1647	892	29.04.2021	इ० आलोक कुमार, स०अभि०, भवन निर्माण बिहार, पिता–श्री गनौरी प्र० मंडल न्यू शिवपुरी कालोनी तिलका माझीं, भागलपुर मो०–09430236920
5	564	109	30.04.2021	इ० राजेश कुमार, उप मुख्य अभि०, ग्राम–कुर्जी, पो०–सदाकत आश्रम, पटना–10, सेन्ट्रल टेस्टींग सर्किट DVC मैथन, झारखंड, मो०–9431395336
6	14	1	30.04.2021	इ० चाणक्य कुमार सिंह, अधिक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, बिहार, पूर्व महासचिव–कुशवाहा अभियंता फोरम, ग्राम+पो०–मुजफ्फरगंज, भाया–हवेली खड़गपुर, जिला–मुंगेर, ए/107 ऑफिसर्स होस्टल, बेली रोड़, पटना, मो०–9431003680, 8544260989, 8210538862
7	2171	1425	02.05.2021	इ० (डा०) अगंद कुशवाहा, मुख्य वैज्ञानिक केन्द्रीय इन्सटीचिउट ऑफ माइनिंग एवं इन्धन रिसर्च, पिता–स्व० शिवदास, मु०–अवलेशपुर, वाराणसी, पो०–कन्दवा, जिला–वाराणसी, Q.No.-11, Type-V, CIMFR, Barwa Road Colony, धनबाद, मो०–9955329396
8	139	91	05.05.2021	इ० नन्द किशोर सिन्हा, स०अभि० (से०नि०) पूर्व महासचिव–कु०अ०फो०, ग्राम–तिसखोरा, पो०–गंगाचक, जिला–पटना, मो० 9162750975
9	1150	438	08.05.2021	इ० बबन प्रसाद, कार्यपालक अभियंता (यां०) से०नि०, ग्राम+पो०–अकोढ़ी, जिला–रोहतास, राधिका निवास, अरपना बैंक कॉलोनी, फेज 2 रामजयपाल रोड़, नियर ब्रहमस्थान, दानापुर, मो०–9334895853
10	266	712	08.05.2021	इ० श्याम कुमार सुन्दर महतो, अधीक्षक अभि० (से०नि०) जल संसाधन विभाग बिहार, पिता श्री छोटु महतो, राम.आर.एफ. टावर शोरूम के पिछे, शीतल स्थान रोड, तिलका मांझी, भागलपुर–812001, द्वारा–डा० नन्द किशोर सिहं, प्रोफेसर कॉलोनी, विलासी टाउन, देवघर
11	1630	874	20.05.2021	इ० चन्द्रशेखर प्रसाद, सहायक दुर्ग अभि०, पिता–श्री चेतन प्रसाद, सिंगारहाट, पो०–सोहसराय जिला–नालन्दा । 482/3 मैप क्वाटर एयर फोर्स, स्टेशन खेरीया, आगरा, मो०–9720641260
12	420	566	22.05.2021	इ० उपेन्द्र प्रसाद कुशवाहा, महा प्रबंधक (से०नि०) एम.46, डी/एक, हरमु हाउसिगं कॉलोनी, राँची फो०–0651–2246883
13	502	55	04.06.2021	इ० लक्षुमण प्रसाद सिंह, सहायक अभि०(यां०) से०नि०, न्यू कॉलोनी, द्वारा रामजी प्रसाद सिंह, प्रमोद होमियो क्लिीनिक, कोरान सराय, बक्सरए मित्र मंडल कॉलोनी, फेज–2, बेउर, पो०–बेउर, पटना, मो०–9852221821
14	1828	1055	31.08.2021	इ० आकांक्षी कीर्ती S.I.S. India Ltd., पिता श्री गिरिजा शंकर मंडल, (से०नि०) एडिटर, A/222, A.G. कॉलोनी, अशियाना नगर, पटना–25 मो० 8826457787
15	95	202	19.12.2021	इ० जिमेदार प्रसाद, कार्य० अभि० (से०नि०) ग्राम–महावर, पो०–दाउदनगर, जिला–औरगांबाद, न्यू एरिया, जक्कनपुर, पटना–1 मो०–9430814699
16	951	472	24.12.2021	इ० राजेन्द्र मेहता, विद्युत कार्यपालक अभि० (से०नि०) पूर्व अध्यक्ष– कुशवाहा अभियंता फोरम, पिता स्व० राम खेलावन महतो, ग्राम–बहाउद्दीनपुर, पोस्ट–बेलादरगाह, जिला–वैशाली, क्वाटर नं०–पी.टी.सी. /सी.1, बी.एस.ई.बी. कॉलोनी, न्यू पूनाईचक, पटना, मो०–09934757236

क्र० सं०	नि० सं०	आ० स०सं०	दिवंगत तिथि	नाम / पदनाम / स्थायी पता / पत्राचार का पता
1	2	3	4	5
17	519	1402	16.01.2022	इ० ब्रजेश कुमार वर्मा, कार्यपालक अभि०, पिता–श्री हिरामन प्रसाद, ग्राम–लेखारामा, पो०–पचौड़ी, जिला–नालन्दा, लक्ष्मी अर्पाटमेंट, अनन्तपुर राँची–834002 फोन –06512481965
18	764	1107	23.01.2022	इ० इन्द्रदेव सिहं, कनीय अभि० (से०नि०), पिता–स्व० भागवत सिहं, ग्राम–खजुरिया, पो०–घटवारी, जिला–मुंगेर, मो० 9470486470, 8294920018
19	382	52	09.02.2022	इ० मुनीलाल सिंह, उप प्रबंधक (से०नि०) ग्राम–कातर, पो०–हसन बाजार, जिला–भोजपुर, (सत्यवती विला, श्री नगर चौक, विद्यानगर, हरमू, राँची–2, मो०–09973778380
20	137	197	–	इ० जयनाथ प्रसाद, कनीय अभि० (से०नि०) ग्राम–वैसखवा, पो०–राजपुर, जिला–पू०चम्पारण। जक्कनपुर, पटना।
				समान्य सदस्य
1	R-865		2020	इ० सत्येन्द्र नारायण सिंह (से०नि०) ग्राम–विसुनपुर, पो०–दामोदरपुर, जिला–पू०चम्पारण, द्वारा इ० विश्वनाथ प्रसाद, सहायक अभियंता, सदर अस्पताल चौक, मोतीहारी, पू०चम्पारण
2	R-991		2020	इ० उग्रमोहन सिंह, कनीय अभि० (से०नि०) पथ निर्माण विभाग, पिता–स्व० गोरेलाल सिंह, बंशीपुर, तारापुर, मुंगेर
3	R/563		2021	इ० राम देव सिहं, क०अभि०, ग्राम+पो०–कमरपुर, जिला–बक्सर, द्वारा–सी०के०झा० शुक्ला कॉलोनी हीनू– राँची–2
4	R/705		30.04.2021	इ० राम बल्लभ महतो (कैप्टन) अधीक्षण अभि० (से०नि०) ग्राम–दादनचक, पो०–घरवाड़ा, जिला–सीतामढ़ी। राजीव नगर, रोड़ न०–1, पटना–24, मो०–9304668791

दिनांक 14.04.2019 को कुशवाहा अभियंता फोरम की वार्षिक आम सभा के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं फोरम के पदाधिकारिगण

कुशवाहा अभियंता फोरम

सोसाईटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित– 901/ 2001–2002

कार्यक्षेत्र – सम्पूर्ण भारत वर्ष

कार्यालय – मौर्य पथ, ''मौर्य कुशवाहा अभियंता भवन''

रेडिऐंट स्कूल के पीछे (पूरब) दानापुर–खगौल रोड, पटना

कु0 अ0 फो0 अनुसूची –1

सामान्य सदस्यता सं०	आजीवन सदस्यता सं०

Website : www.kushwahaabhiyantaforum.org

पासपोर्ट साइज फोटो यहाँ चिपकाएँ ।

(सदस्यता हेतु आवेदन-प्रपत्र)

1. नाम (i) हिन्दी में ..... पदनाम.....
   अंग्रेजी में (बड़े अक्षरों में)..... पदनाम अंग्रेजी में .....
2. पिता/पति का नाम.....
3. स्थायी पता : ग्राम/मुहल्ला.....
   पोस्ट..... जिला..... पिन कोड.....
4. पत्राचार का पता.....
   .....
5. वैवाहिक स्थिति विवाहित / अविवाहित
6. नियोजन का ब्योरा (i) सरकारी / अर्द्ध सरकारी / गैर सरकारी सेवा में कार्यरत / स्वनियोजित /
   (जो लागू न हो काट दें) अनियोजित / सेवा निवृत
   (ii) विभाग/संस्था.....
   कम्पनी का पूरा नाम
   (iii) कार्यालय का पूरा पता.....
7. E-Mail Address .....
8. Tel. No. ..... Mobile No. .....
9. रक्त–समूह A / B / AB / O Negative / Positive
   (जो लागू न हो उसे काट दें)
10. योग्यता : उपाधि शाखा संस्थान उत्तीर्णता का वर्ष
    स्नातक / डिप्लोमा .....
    .....
11. जन्म तिथि .....

मैंने कुशवाहा अभियंता फोरम के संविधान को ध्यानपूर्वक पढ़कर समझ लिया है। मैं इस संगठन का स्वेच्छा से साधारण/आजीवन संदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि संगठन के नियमों का पालन करूँगा/करूँगी।

साक्षी — आवेदक का हस्ताक्षर

(कार्यालय उपयोग के लिए)

क्र.	प्राप्त शुल्क का ब्योरा	राशि	क्षेत्रीय रसीद सं./तिथि	राशि	केन्द्रीय रसीद सं./तिथि
1.	सदस्यता निबंधन शुल्क	.....		.....	
2.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	.....		.....	
3.	आजीवन सदस्यता शुल्क	.....		.....	
4.	अन्य	.....		.....	

क्षेत्रीय प्राप्तकर्त्ता का हस्ताक्षर | अध्यक्ष | कोषाध्यक्ष | महासचिव

12. शैक्षणिक योग्यता (मैट्रिक से आगे सभी परीक्षा के बारे में)

परीक्षा का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	उत्तीर्णता का वर्ष

13. पारिवारिक ब्योरा

नाम	संबंध	उम्र	शिक्षा	व्यवसाय

आवेदक का हस्ताक्षर

मौर्यवंशी कुशवाहा समाज का गौरवशाली इतिहास

मौर्यवंशी समाज का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। जिस वंश में महात्मा बुद्ध, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक महान जैसे महान लोग पैदा हुए, सचमुच में वह समाज महान है। कहा जाता है कि जिसने जीता वह सिकंदर है और जिस ने सिकंदर को जीता, वह मौर्य वंशी है, वह कुशवंशी है। भारत और भारत के बाहर मौर्यवंशी समाज की जनसंख्या लगभग 20 करोड़ से भी अधिक है। मौर्यवंशी समाज एक अंतरराष्ट्रीय जाती है। भारत की एकमात्र जाती कुशवाहा है, जिसका शासन मारीशस में भी चलता है। मॉरीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम जी मौर्यवंशी कुशवाहा थे। सर शिवसागर रामगुलाम के पूर्वज एवं पिता मोहित महतो भोजपुर जिला के हरिगांव गांव के निवासी थे। शिवसागर रामगुलाम ने महात्मा गांधी की भांति 12 मार्च, 1968 को ब्रिटिश अधिपत्य से मारीशस को आजाद कराया। आजादी के बाद वे 17 वर्षो तक (1968–1985) मॉरीशस के प्रधानमंत्री एवं अंतत: राष्ट्राध्यक्ष रहे। 15 दिसंबर 1985 को 50 वर्ष की आयु में इस मौर्यवंशी कुशवाहा सम्राट का देहांत हो गया। आज भी उनके पुत्र नवीन चंद्र रामगुलाम मॉरीशस के राजनीति में सक्रिय रहते हैं प्रधानमंत्री भी रहे हैं। अभी विरोधी दल के नेता हैं।

मौर्यवंशी समाज के लोग देश विदेश में कुशवाहा, मौर्य, शाक्य, सैनी, माली, मरार, कापड़ी, मंडल, कोइरी, चौधरी, पंजियार, भाजी, महतो, मेहता, कछवाहा, काछी, भगत, गहलौत, कुशवाह, हरदिया, पटेल, बर्मा, भुजबल, रेडी, फुले, नायर, सिहं आदि विभिन्न जातिसूचक उपनामों से दूर–दूर तक फैले हैं। यह एक लड़ाकू और जुझारू जाती हैं। आज तक भारतीय समाज मे जितने भी सामाजिक परिवर्तन की लड़ाईयां लड़ी गई प्राय: सभी का नेतृत्व कुशवाहा समाज ने किया है। प्राचीन काल की छठी शताब्दी ईसा पूर्व में सामाजिक परिवर्तन की लड़ाइयाँ तथागत गौतम बुद्ध के नेतृत्व में लड़ी गई थी, जबकि आधुनिक काल में वही लड़ाई महात्मा फुले ने लड़ी थी। तथागत गौतम बुद्ध शाक्यवंशी थे और राष्ट्रपितामह महात्मा फुले माली थे। कहना न होगा कि शाक्य और माली मौर्यवंशी कुशवाहा समाज के अंतर्गत आते हैं। सभी जानते है कि तथागत गौतम बुद्ध का विवाह कोलिय वंश की राजकुमारी यशोधरा से हुआ था। पहले कोलिय और आज का कोयरी एक ही शब्द के अलग–अलग रूप है। तथागत गौतम बुद्ध ने जिस बौद्ध धर्म की बुनियाद भारत में डाली, वह देश–देशांतर में फैल गया। भारत का इतिहास गवाह है कि बौद्ध धर्म का जितना देश–विदेश में प्रचार–प्रसार हुआ, उतना किसी भी धर्म का नहीं हुआ। श्रीलंका और बर्मा से लेकर जापान और कोरिया तक बौद्ध धर्म का पताका आज भी फहरा रहा है। कुशवाहा समाज को ऐसे अंतरराष्ट्रीय धर्म पर गर्व हैं।

मौर्यवंशीयों का एक उपाधि मौर्य है। मौर्य वंश का इतिहास उज्जवल एवं गौरवशाली है। इसी मौर्य वंश में चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और अशोक महान जैसे सम्राट हुए। चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में मेगास्थनीज भारत आया था। उसने लिखा है कि राजा की शान और तेज महान है। चंद्रगुप्त मौर्य का पाटलिपुत्र स्थित राज–महल अत्यंत भव्य एवं विशाल था। मेगास्थनीज लिखा है कि शाही महल के सामने सूसा और एकबटान के महल कुछ भी नहीं है। उसने यह भी लिखा है कि राजा मोतियों से सज्जित सोने की पालकी में बैठकर लोगों को दर्शन दिया करते हैं। यह है मौर्य वंश का उज्जवल इतिहास। इसी बीच के सम्राट अशोक मौर्य के बारे में एच०जी०वेल्स ने लिखा है कि अशोक का नाम इतिहास में सितारों की तरह चमकता है। वोल्गा से जपान तक आज भी उनका नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। जिस सम्राट की शान हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है जिस सम्राट का धर्म–चक्र हमारे राष्ट्रीय ध्वज के केंद्र में है और जिस सम्राट के नाम से भारत का सर्वोच्च वीरता पदक ''अशोक चक्र'' दिया जाता है, ऐसे सम्राटों के सम्राट हैं चक्रवती अशोक मौर्य महान।

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की सबसे मजबूत लड़ाई लड़ने वाले महात्मा फुले का जन्म कुशवाहा माली परिवार में 11 अप्रैल, 1827 ईस्वी को महाराष्ट्र के पुणे में हुआ था। बचपन से ही मेधावी, प्रतिभा के धनी थे। एक वर्ष की अवस्था में इनके माता जी का निधन हो गया था। इनके परिवार के लोग खेती बाड़ी और फूलों का कारोबार करते थे। ज्योतिबा राव फुले पढ़ना चाहते थे लेकिन कट्टरपंथियों के द्वारा पिछड़े वर्ग के लोगों को शिक्षा से वंचित कर दिया

गया था। ज्योतिबा फुले मिशन स्कूल में पढ़े। 14 वर्ष की अवस्था में इनका शादी सावित्रीबाई फुले से हुआ। एक ब्राहमण मित्र के शादी समारोह में गए थे। जहाँ उनका अपमान हुआ, अपमान होने के बाद उन्होंने संकल्प लिया, मैं इस भारत की सरजमी पर सामाजिक परिवर्तन करने का संकल्प लेता हूँ। उनके मन–मस्तिक में सामाजिक–परिवर्तन की बातें हिलकोरे लेने लगी। 1848 इसवी में पूणे में प्रथम बालिका दिद्यालय का स्थापना किए, जहॉ पर उनकी पत्नी भारत के प्रथम महिला अध्यापिका बनी। पिछड़ों किसानों के हक–अधिकार दिलाने के लिए 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की, गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत। वह बाल–विवाह के विरोधी एवं विधवा विवाह के पक्षधर थे। उन्होंने महिला उत्थान के लिए कई कार्य किए, लंबी बीमारी के कारण 28 नवंबर, 1890 को उनका परिनिर्वाण हो गया।

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र स्थित सतारा के नयागाँव में हुआ था जो देश की पहली महिला अध्यापिका बनी, महिलाओं की शिक्षा, उनके अधिकारों की लड़ाई, पुरूषों के समान अधिकार में महत्वपूर्व योगदान दिया। उन्होंने कन्या शिशु हत्या रोकने एवं नवजात कन्या शिशु के लिए आश्रम तक खोले। उनकी शादी 9 साल की उम्र में ही ज्योतिब राव फुले से हो गई थी। ज्योतिबा फुले ने स्त्रियों की दशा सुधारने हेतु सन् 1848 में एक बालिका स्कूल खोला जो देश का प्रथम बालिका विद्यालय था। कुछ दिन स्वयं पढ़ाया, फिर अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को इस योग्य बना दिया। सावित्री बाई फुले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली अध्यापिका और प्रिंसिपल बनी। सावित्री बाई फुले कन्याओं को पढ़ाने के लिए जाती थीं, तो रास्ते में कट्टरपंथियों के द्वारा उनपर गंदगी, कीचड़, गोबर, ईट, पत्थर तक फेंका करते थे। सावित्री बाई फुले एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थी और स्कूल पहुंच कर गंदी कर दी गई, साड़ी बदल लेती थीं। फुले दंपति ने ब्राहम्न विधवा के बेटे यशवंतराव को गोद लिया था। उन्होंने अपने बेटे यशवंत राव फुले के साथ मिलकर अस्पताल भी खोला था। इसी अस्पताल में प्लेग महामारी के दौरान सावित्री बाई फुले प्लेग के मरीजों की सेवा करती थीं। एक प्लेग से प्रभावित बच्चे की सेवा करने के कारण उनको भी यह बीमारी हो गई । जिसके कारण उनकी 10 मार्च 1987 को मौत हो गई।

मौर्यवंश का गौरवशाली इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ा है। आप जानते होगें कुंवर सिंह के प्रेरणा स्रोत अजायब महतो रहें हैं। अजायब महतो का जन्म कुशवाहा परिवार में आरा के आस–पास गुड्डी सरैया गांव में हुआ था । वे कुवंर सिंह से उम्र में कोई 20 साल बड़े थे। कहा जाता है कि कुवंर सिंह ने 80 वर्ष की अवस्था में अंग्रजों से लोहा लिया था, अब यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि अजायब महतो ने 100 वर्ष की अवस्था में अंग्रेजों के खिलाफ जंग का ऐलान किया था। ऐसे ही कुशवाहा समाज के एक योद्धा सरदार उधम सिंह सैनी थे। उधम सिंह सैनी का जन्म 26 दिसम्बर, 1899 को पंजाब के सुनाम गांव में हुआ था। 13 अप्रैल, 1919 को हुए जालियांवाला बाग हत्याकांड से वे अत्यंत दुखी थे। उन्होंने इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी जनरल ओ डायर को एक साल बाद 13 मार्च, 1940 को इंग्लैंड में लंदन असेंबली में जाकर गोली मारकर मौत के घाट उतार दिए थे। 31 जुलाई, 1940 को पेंटनविले जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। पंजाब में सैनी कुशवाहा समाज का अविभाज्य अंग है। कुशवाहा समाज को उधम सिंह सैनी की शहादत पर गर्व है।

आजादी की लड़ाई में चौरी–चौरा विद्रोह का विशेष महत्व है। साल 1922 में हुए इस विद्रोह में आंदोलनकारियों ने 22 पुलिसकर्मी को जिंदा जला दिए थे। तत्कालीन सेशन कोर्ट ने चौरी–चौरा कांड के 225 अभियुक्तों में से 172 को मृत्युदंड दिया था, पर अंतत: 19 लोगों को फांसी लगी। इन्हीं अभियुक्तों में से एक थे– इंद्रजीत कोइरी। चौरी–चौरा विद्रोह में उनकी सक्रिय भूमिका थी। पर वे फरार अभियुक्त थे। कुशवाहा समाज के ही एक अत्यंत लोकप्रिय साहित्यकार थे, कुशवाहा कांत। कुशवाहा कांत का जन्म मिर्जापुर के मुहल्ला महुअरिया में 9 दिसम्बर, 1918 को हुआ था उन्होंने ''लाल रेखा'' और ''विद्रोही सुभाष'' जैसे राष्ट्रप्रेम के उपन्यास लिखें। उनके उपन्यासों पर फिल्में भी बनी है। पर बहुत कम लोग जानते हैं कि कुशवाहा कांत स्वतंत्रता सेनानी भी थे। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में वे काफी सक्रिय रहे। मिर्जापुर में अंग्रेजों के खिलाफ जो लड़ाई लड़ी गई, उसमें कुशवाहा कांत की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक वर्ष के लिए जेल भी गए। कुशवाहा

कांत ने 1943 में रॉयल एयरफोर्स में नौकरी की। पर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें अंग्रेज विरोधी आंदोलन में शामिल होने के कारण नौकरी से हटा दी।

जिस समय भारत में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चल रहा था, उस समय भी कुशवाहा समाज के अनेक महापुरुष सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहे थे। ऐसे महापुरुषों में एक थे- जे पी चौधरी। जे पी चौधरी का जन्म मिर्जापुर जिले के उदलहाट नामक गांव में 1881 में हुआ था। जे पी चौधरी कुशवाहा समाज के सच्चे हितैषी थे। वह जीवन पर्यंत विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करते रहे। अपने दौरा के क्रम में वे कुशवाहा समाज को जगाते रहे। वे विद्वान भी थे। उन्होंने ''कुशवाहा वंश परिचय'' नामक पुस्तक लिखी है। इसके अलावा उनकी अनेक पुस्तकें हैं जो समाजिक एवं राजनीतिक चेतना से लैस है। ऐसे ही एक सामाजिक चेतना फैलाने वाले कुशवाहा समाज की विभूति थे - यदुनंदन प्रसाद मेहता। यदुनंदन प्रसाद मेहता ''त्रिवेणी संघ'' के संस्थापकों में से एक थे। उनका जन्म शाहाबाद जिले के जितौरा गांव के लाखनटोना में 18 फरवरी, 1911 को हुआ था। 1940 में उन्होंने ''त्रिवेणी संघ का बिगुल'' नामक पुस्तक की रचना की थी। उन्होंने 1948 में एक पत्रिका ''शोषित पुकार'' का संपादन किया था। उन्होंने कुशवाहा समाज पर एक किताब ''कुशवाहा प्रकाश'' भी लिखा था। पिछड़ों के बीच बेगारी, ऊँच-नीच और शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ यदुनंदन प्रसाद मेहता ने जबरदस्त आंदोलन किया था।

आजादी के बाद भी कुशवाहा समाज सक्रिय रहा। बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद से लेकर मास्टर जगदीश प्रसाद, ज्योति प्रकाश, डॉक्टर निर्मल कुमार महतो और कामरेड चंद्रशेखर जैसे अनेक महापुरुषों ने समाज हित में अपना बलिदान दिया। कुशवाहा समाज में शहीदी की लंबी परंपरा रही है। 2 फरवरी 1922 को अरवल जिला के कुर्था प्रखंड के कुरहारी गांव में जन्में बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद ने आजीवन शोषितों के पक्ष में लड़ाई लड़ी। उनका नारा था- दस का शासन नब्बे पर नहीं चलेगा, नहीं चलेगा। शोषकों के खिलाफ जंग लड़ने वाले ऐसे महापुरुष ने 5 सितंबर 1974 को अपनी जान की कुर्बानी सरकार की गोली खा कर दी। गरीबों के लिए रोटी और इज्जत की लड़ाई लड़ने वाले मास्टर जगदीश प्रसाद महतो को कौन नहीं जानता है? मास्टर जगदीश प्रसाद भोजपुर जिला के एकवारी गांव के थे। महेश्वता देवी ने उनके जीवन पर एक उपन्यास लिखा है-'मास्टर साहब'। वे आरा जैन स्कूल में शिक्षक थे। पर सामंतों के अत्याचार से अजिज होकर वह भूमिगत हो गए थे। उनके जीवन पर एक उपन्यास मधुकर सिंह ने भी लिखा है। मधुकर सिंह भी कुशवाहा थे तथा वे भी मास्टर जगदीश प्रसाद के साथ जैन स्कूल आरा में पढ़ते थे। मधुकर सिंह का जन्म आरा के पास धरहरा नामक गांव में 1934 ई में हुआ था। कुशवाहा समाज के बहुत बड़े साहित्यकार थे। गरीबों तथा पिछड़े दलितों के पक्ष में वे सदैव लिखते रहे। उनके दर्जनों उपन्यास और सैकड़ों कहानियाँ हैं। उन्होंने ''अर्जन जिंदा'' है नाम से मास्टर जगदीश प्रसाद पर इतिहास लिखा है। अत्याचारी सामंतों के खिलाफ लड़ते-लड़ते आखिरकार मास्टर साहब 10 दिसम्बर 1972 को अनजाने में ही अपने लोगों के हाथ शहीद हो गए।

ज्योति प्रकाश का जन्म 11 दिसंबर, 1939 को बक्सर जिले की इटाढ़ी प्रखंड के इंदौर गांव में हुए था। उन्होंने मजदूरों और किसानों के लिए भरपूर लड़ाई लड़ी। पर सामंती शक्तियों को उनका यह कार्य मंजूर नहीं था। 17 मार्च, 1983 को बक्सर से आरा जाने के क्रम में ज्योति प्रकाश की सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी गई। सचमुच ज्योति प्रकाश कुशवाहा समाज के ज्योतिपुंज थे। कुशवाहा समाज के वीर पुरुष डॉ. निर्मल कुमार महतो 27 वर्ष के जीवनकाल में ही मार डाले गए। डॉ. निर्मल कुमार संदेश प्रखंड के बारोरा गांव के निवासी थे। वह दरभंगा मेडिकल कॉलेज में एम.बी. बी.एस. के छात्र थे। वो सामंतों के अत्याचार से मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर भूमिगत हो गए थे। 29 नवंबर 1975 को डॉ. निर्मल कुमार शहीद हुए। 32 वर्ष की आयु में कामरेड चंद्रशेखर भी शहीद हुए। कामरेड चंद्रशेखर का जन्म सिवान जिला के बिंदुसार गांव में 20 सितंबर, 1964 को हुआ था। उनके अंदर समाज को बदलने की बेचैनी थी। पर समतामूलक समाज स्थापिन करने में उन्हें भी जीवन से हाथ धोना पड़ा। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से भिखारी ठाकुर के नाटक पर एम. फिल किया था। दिल्ली जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र संघ के अध्यक्ष भी थे। कहना न होगा कि कुशवाहा समाज के अनेक महापुरुषों ने अपना बलिदान किया । बल्कि सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई में सबसे ज्यादा अपनी आहुति कुशवाहा समाज के विभूतियों ने दिया।

D.K. Dhiraj, Patna